भारतीय रेल

जुलाई 2026 | मूल्य ₹70

संकल्प से सिद्धि तक
उपलब्धियों की स्वर्णिम यात्रा

वार्षिक विशेषांक

वित्त वर्ष 2025-26

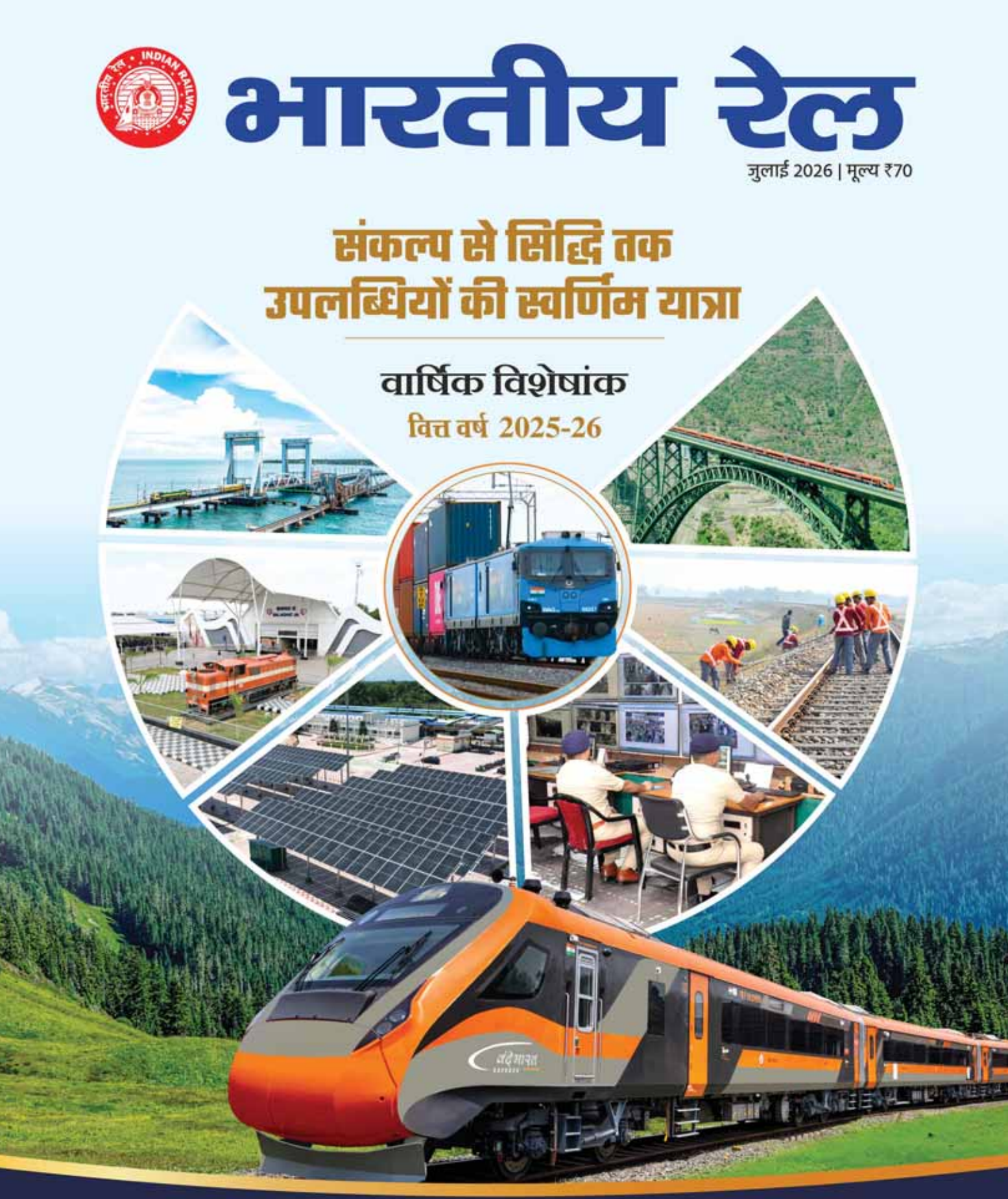

164 वंदे भारत ट्रेन सेवाएँ

66 अमृत भारत ट्रेन सेवाएँ

208 स्टेशनों का पूर्णनिर्माण 1337 में से

99.6% रेल नेटवर्क का विद्युतीकरण

विकास की पटरियों पर नया भारत

गति, तकनीक और परिवर्तन का संगम मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना

अंजुम परवेज
प्रबंध निदेशक

नेशनल हाई-स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एनएचएसआरसीएल) को भारत में हाई स्पीड रेल कॉरिडोर के वित्त, निर्माण, रखरखाव तथा प्रबंधन के उद्देश्य से दिनांक 12 फरवरी, 2016 को कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत निगमित किया गया था। कंपनी को रेल मंत्रालय और दो राज्य सरकारों, गुजरात सरकार और महाराष्ट्र सरकार के माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा इक्विटी भागीदारी के साथ संयुक्त क्षेत्र में 'विशेष प्रयोजन वाहन' के रूप में तैयार किया गया है।

एक टेक्नोलॉजिकल मार्वल होने के अलावा हाई-स्पीड रेल (एचएसआर) परियोजना, यात्रा के समय तथा वाहन संचालन लागत में बचत, प्रदूषण में कमी, रोजगार सृजन, दुर्घटनाओं में कमी/अधिक सुरक्षा, आयातित ईंधन प्रतिस्थापन और प्रदूषकों में कमी जैसे कई निर्धारण योग्य लाभ प्रदान कर सकेगी। यह परियोजना आधारिक संरचना को मजबूती प्रदान कर अर्थव्यवस्था के विकास में भी योगदान करेगी।

मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना

मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना भारत की प्रगति का एक सशक्त प्रतीक है, जो हाई-स्पीड रेल के क्षेत्र में देश की दूरदर्शी सोच और भविष्य की ओर बढ़ते हुए साहसिक कदम को दर्शाती है। वर्ष 2025 विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण रहा है, जिसने परियोजना को सुदृढ़ निर्माण गति से परिचालन तत्परता की दिशा में अग्रसर किया है।

गुजरात और महाराष्ट्र खंडों में हुई उल्लेखनीय प्रगति न केवल इंजीनियरिंग उत्कृष्टता को दर्शाती है, बल्कि इसमें अनेक हितधारकों और हजारों श्रमिकों के समन्वित प्रयास, सटीकता और अटूट प्रतिबद्धता भी झलकती है।

वित्त वर्ष 2025-26 की प्रमुख उपलब्धियों में से एक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सूरत बुलेट ट्रेन स्टेशन (निर्माणाधीन) का ऐतिहासिक दौरा रहा। यह क्षण परियोजना के रणनीतिक महत्त्व और भारत के बुनियादी ढाँचे के भविष्य को आकार देने में इसकी भूमिका को दर्शाता है। यह एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था — सर्वोच्च स्तर पर इस बात की पुनः पुष्टि, कि मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना केवल एक बुनियादी ढाँचा निवेश ही नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय प्राथमिकता है।

प्रधानमंत्री द्वारा दिनांक 15 नवंबर, 2025 को निर्माणाधीन सूरत बुलेट ट्रेन स्टेशन का दौरा किया गया

निर्माण उपलब्धियाँ : व्यापकता और सटीकता

निर्माण के क्षेत्र में वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की गई है। दिनांक 31 मार्च, 2026 तक 343 कि.मी. से अधिक वायाडक्ट और 434 कि.मी. पियर कार्य पूर्ण किया जा चुका है। यह केवल इंजीनियरिंग उपलब्धि नहीं, बल्कि विविध भौगोलिक परिस्थितियों, नियामकीय प्रक्रियाओं और स्थल परिस्थितियों के बीच उत्कृष्ट समन्वय का परिणाम है।

गुजरात में परियोजना उन्नत चरण में है, जहाँ अधिकांश सिविल कार्य पूर्णता के निकट हैं। वित्त वर्ष 2025-26 में वलसाड जिले में दारोथा और दमन गंगा नदियों तथा वडोदरा जिले में विश्वामित्री नदी पर तीन और ब्रिज पूरे किए गए, जिससे कुल 21 में से 17 नदी ब्रिजों का निर्माण पूरा हो गया है।

सात स्टील ब्रिज और एक प्रीस्ट्रेस्ड कंक्रीट (PSC) ब्रिज भी पूरे किए गए हैं। गुजरात में अब 13 स्टील ब्रिज और सभी 5 PSC ब्रिज पूरे हो चुके हैं। पूरे कॉरिडोर में कुल 28 स्टील ब्रिज प्रस्तावित हैं—17 गुजरात में और 11 महाराष्ट्र में।

इसके अतिरिक्त, लगभग 5.6 लाख नॉइज बैरियर 283 कि.मी. के कॉरिडोर पर इनस्टॉल किए जा चुके हैं, जिनमें से 2.5 लाख पिछले वर्ष गुजरात के 120 कि.मी. खंड में लगाए गए।

ट्रैक बिछाने का कार्य भी प्रगति पर है। गुजरात में लगभग 364 ट्रैक कि.मी. का आरसी ट्रैक बेड तैयार किया जा चुका है। महाराष्ट्र खंड के लिए अनुबंध हस्ताक्षरित हो चुका है और शीघ्र ही वहाँ कार्य शुरू किया जायेगा।

विद्युतीकरण कार्य भी समानांतर रूप से शुरू हो चुका है। गुजरात में मुख्य लाइन वायाडक्ट के 171 रूट कि.मी. पर 7,000 से अधिक ओवरहेड इलेक्ट्रिफिकेशन स्थापित किए जा चुके हैं।

पूरे कॉरिडोर के 12 स्टेशनों पर निर्माण कार्य प्रगति पर है। गुजरात के आठ स्टेशनों पर संरचनात्मक कार्य पूर्ण हो चुका है। साबरमती और सूरत रोलिंग स्टॉक डिपो में कार्य प्रगति पर है।

साबरमती स्थित हाई-स्पीड रेल मल्टीमॉडल हब को 2025 से 2028 की अवधि के लिए इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल (IGBC) द्वारा प्रतिष्ठित 'IGBC गोल्ड रेटिंग' से सम्मानित किया गया है—यह बुलेट ट्रेन परियोजना की पहली इमारत है, जिसे यह प्रमाणन प्राप्त हुआ है। यह उपलब्धि इस दृढ़ संकल्प को दर्शाती है कि विकसित की जा रही अवसंरचना न केवल प्रदर्शन में विश्वस्तरीय हो, बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी जिम्मेदार हो।

सूरत, बिलिमोरा, वापी, भरूच, आणंद और वडोदरा — इन छह स्टेशनों के लिए मल्टीमॉडल इंटीग्रेशन के अनुबंध किए गए हैं, जिससे यात्रियों को बुलेट ट्रेन और स्थानीय परिवहन नेटवर्क के बीच सहज आवागमन सुनिश्चित होगा। इस परियोजना के केंद्र में केवल गति नहीं, बल्कि सुदृढ़ और सुगम कनेक्टिविटी है।

जबकि गुजरात सिविल कार्यों के विस्तार में अग्रणी रहा है, महाराष्ट्र वित्त वर्ष 2025-26 में सबसे जटिल और उन्नत इंजीनियरिंग उपलब्धियों का केंद्र बना है। बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स (BKC) से शिलफाटा के बीच 21 कि.मी. लंबी भूमिगत सुरंग इस पूरी परियोजना के सबसे चुनौतीपूर्ण घटकों में से एक है। इस सुरंग के 5 कि.मी. हिस्से की खुदाई NATM के माध्यम से सफलतापूर्वक की जा चुकी है, जबकि शेष 16 कि.मी. की खुदाई अत्याधुनिक टनल बोरिंग मशीनों (TBMs) द्वारा की जाएगी। इस उद्देश्य के लिए दो TBM साइट पर पहुँच चुकी हैं और वर्तमान में उनकी असेंबली तथा शाफ्ट में उतारने की प्रक्रिया तेजी से जारी है।

महाराष्ट्र का पालघर क्षेत्र, जो अपनी जटिल और चुनौतीपूर्ण भूगर्भीय परिस्थितियों के लिए जाना जाता है, इस वर्ष दो बड़ी उपलब्धियाँ हासिल करी। पहली उपलब्धि लगभग 1.5 कि.मी. लंबी माउंटेन टनल (एमटी-5) में मिली, जो विरार और बोइसर बुलेट ट्रेन स्टेशनों को जोड़ती है, जो पालघर की पहाड़ी सुरंगों में यह सबसे लंबी है और इसका ब्रेकथ्रू दिनांक 2 जनवरी, 2026 को हुआ। दूसरी उपलब्धि कुछ ही सप्ताह बाद दिनांक 3 फरवरी, 2026 को माउंटेन टनल एमटी-6 में मिली। यह सुरंग 454 मीटर लंबी और 14.4 मीटर चौड़ी है, जिसमें अप और डाउन दोनों ट्रैक समा सकेंगे। इन दोनों उपलब्धियों को रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने डिजिटल माध्यम से देखा और ये उपलब्धियाँ प्राकृतिक चुनौतियों के बीच तकनीकी उत्कृष्टता और बेहतर समन्वय के साथ लगातार प्रयासों का प्रमाण हैं। शेष पांच पहाड़ी सुरंगों पर कार्य भी तेज गति से जारी है।

महाराष्ट्र के पालघर में दूसरी पहाड़ी सुरंग का ब्रेकथ्रू

महाराष्ट्र में तीनों एलिवेटेड स्टेशन यानी ठाणे, विरार और बोइसर पर कार्य तेजी से प्रगति पर है। दहानू में पहला फुल-स्पैन बॉक्स गर्डर भी लॉन्च किया गया। कई जगहों पर पियर नींव और निर्माण कार्य जारी है, जिससे इस भौगोलिक रूप से चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में कॉरिडोर का विस्तार लगातार हो रहा है।

महाराष्ट्र के पालघर में दूसरी पहाड़ी सुरंग का ब्रेकथ्रू

परियोजना के एकमात्र भूमिगत स्टेशन, मुंबई बुलेट ट्रेन स्टेशन पर भी कार्य लगातार आगे बढ़ रहा है। प्लेटफॉर्म को जमीन से लगभग 26 मीटर गहराई पर बनाया जाना है। लगभग 94% खुदाई कार्य पूरा हो चुका है और वर्तमान में स्लैब कास्टिंग का काम जारी है।

सुरक्षा, कौशल सृजन और लोगों के सशक्तिकरण को प्राथमिकता

इतने बड़े स्तर की परियोजना लोगों के प्रयासों से बनती है और उनकी सुरक्षा सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। सुरक्षा जागरूकता अभियान 'प्रयास' (नुक्कड़ नाटक) 80 से अधिक निर्माण स्थलों पर आयोजित किया गया, जिनमें कास्टिंग यार्ड, टनल शाफ्ट, स्टेशन, डिपो, ब्रिज और वायाडक्ट शामिल थे। इस अभियान के तहत पूरे कॉरिडोर में 11,000 से अधिक श्रमिकों से सीधे संवाद किया गया। इसका पहला चरण अगस्त 2025 में और दूसरा चरण फरवरी-मार्च 2026 में आयोजित किया गया।

ईंट, स्टील और सुरंगों से आगे बढ़कर यह परियोजना एक अन्य जिम्मेदारी निभा रही है यानी भारत की पहली पीढ़ी के हाई स्पीड रेल इंजीनियर तैयार करने की जिम्मेदारी। तकनीकी संस्थानों के लिए आयोजित संरचित साइट विजिट के जरिए युवा इंजीनियरों को हाई स्पीड रेल निर्माण का प्रत्यक्ष अनुभव मिल रहा है और वे वायाडक्ट और ब्रिज निर्माण, ओवरहेड विद्युतीकरण प्रणाली, स्टेशन निर्माण तथा हर चरण में लागू गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों को नजदीक से समझ रहे हैं।

कर्मचारी कल्याण और सामाजिक जिम्मेदारी

कर्मचारियों के कल्याण को प्राथमिकता देते हुए स्वास्थ्य शिविर, रक्तदान अभियान, सीपीआर प्रशिक्षण और पुरुषों तथा महिलाओं दोनों के लिए सकारात्मक और सहयोगी कार्यस्थल बनाने हेतु कार्यशालाएं आयोजित की गईं। वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने टीम भावना, आपसी सहयोग और जुड़ाव की भावना को और मजबूत किया।

एनएचएसआरसीएल ने समुदायों के उत्थान, स्वास्थ्य सुधार और जरूरतमंद लोगों को आवश्यक सहायता देने हेतु कई सीएसआर पहल शुरू की हैं। इनमें स्मार्ट कक्षाओं की स्थापना, स्वास्थ्य जाँच शिविर, आर्थिक रूप से कमजोर दिव्यांग व्यक्तियों को मॉड्यूलर तकनीक आधारित कृत्रिम अंग वितरित करना तथा स्कूलों में मध्याह्न भोजन परोसने हेतु फूड प्लेट उपलब्ध कराना शामिल है।

उत्कृष्टता के लिए सम्मानित

एनएचएसआरसीएल को गवर्नेंस नाउ 12वें पीएसयू अवॉर्ड्स में दो श्रेणियों यानी राष्ट्र सृजन (सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण) तथा कॉरपोरेट कम्युनिकेशन (इनोवेटिव कंटेंट स्ट्रैटजी) में सम्मानित किया गया। 19वें ग्लोबल कम्युनिकेशन कॉन्क्लेव 2025 के दौरान 15वें पीआरसीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड्स 2025 में कॉरपोरेट फिल्म्स श्रेणी में एक्सीलेंस अवॉर्ड (गोल्ड) भी दिया गया। ये सम्मान सतत अवसंरचना के प्रति एनएचएसआरसीएल की प्रतिबद्धता और इस

परिवर्तनकारी परियोजना की सोच व प्रगति को प्रभावी ढंग से पेश करने के लिए उसके नवाचारपूर्ण संचार प्रयासों को दर्शाते हैं।

हाल ही में स्थापना के 10 वर्ष पूर्ण करने के साथ एनएचएसआरसीएल ने एक महत्त्वपूर्ण संस्थागत उपलब्धि हासिल की है। पूरी टीम के समर्पित और समन्वित प्रयासों ने महत्त्वाकांक्षाओं को ठोस प्रगति में परिवर्तित किया है और यह प्रगति अब परिचालन प्रारंभ होने के कगार पर पहुँच चुकी है।

एनएचएसआरसीएल को भविष्य की परियोजनाओं के मानक तय करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना से मिले अनुभव के आधार पर हम गुणवत्ता, सुरक्षा और नवाचार के सर्वोच्च मानकों को बनाए रखते हुए आगामी कॉरिडोर परियोजनाओं का मार्गदर्शन करने की अच्छी स्थिति में हैं।

हर नई उपलब्धि के साथ लक्ष्य और स्पष्ट हो रहा है, गति और मजबूत हो रही है तथा मंजिल और करीब आ रही है। विजन से वेलोसिटी तक की यह यात्रा तेजी से आगे बढ़ रही है और भारत की प्रगति, नवाचार तथा साझा संकल्प का गर्वपूर्ण प्रतीक बनने हेतु पूरी तरह से तैयार है। ■

मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना

टनल बोरिंग मशीन (टीबीएम)

महाराष्ट्र में बीकेसी और शिलफाटा के बीच इस परियोजना के लिए 21 कि.मी. लंबी सुरंग

7 कि.मी. लंबी समुद्र के नीचे की सुरंग भी शामिल

तकनीकी विशिष्टताएँ

कटर हेड का व्यास 13.6 मीटर

- **टीबीएम प्रकार :** मिक्स शील्ड / स्लीरी आधारित
- **प्रत्येक टीबीएम की लंबाई :** 95.32 मीटर
- **वजन :** टीबीएम 1 : 3080 टन | टीबीएम 2 : 3184 टन
- **टीबीएम के भाग :** कटर व्हील, मुख्य बेयरिंग, जॉ क्रशर, एरेक्टर, मुख्य शील्ड, टेल शील्ड, गैंट्री 1-4